जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक एवं कालिक स्वरुप का विश्लेषण (सहरसा जिला के संदर्भ में)

नवनीत

डॉ० डी०के०चौधरी

मानव भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र विन्दू तथा महत्वपूर्ण संसाधन है। समाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के विभिन्न चरणों का संरचनात्मक स्वरुप मानव द्वारा निर्धारित होता है। मानव अपनी संरचनात्मक एवं गुणात्मक विशेषताओं के अनुसार किसी देश के लिए वरदान या अभिशाप दोनो है। मानव की स्थानिक, समाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक संरचना उसे एक संसाधन के रुप में विकसित करती है। मानव एक जैविक संसाधन है जो प्राकृतिक संसाधनों को उपयोग योग्य बनाकर संसाधन का स्वरुप प्रदान करता है। मानव संसाधन जैविक कारक होने के कारण इसकी संख्या में परिवर्तन होता रहा है। जहाँ उपयुक्त भौगोलिक दशायें होती है वहाँ सकारात्मक परिवर्तन तथा जहाँ विपरीत परिस्थितियाँ होती है वहाँ नकारात्मक परिवर्तन होते हैं। भौतिक संसाधन एवं जनसंख्या का संतुलित अनुपात क्षेत्रीय विकास में सहायक होता है। इसके विपरीत जनसंख्या एवं भौतिक संसाधन का असंतुलित अनुपात क्षेत्रीय विकास में बाधक होता है।